करेंट अफेयर्स

राजस्थान

(संग्रह)

जून 2025

Drishti, 641, First Floor,
Dr. Mukharjee Nagar, Delhi-110009
Inquiry: +91-87501-87501
Email: care@groupdrishti.in

अनुक्रम

राजस्थान **3**

- राजस्थान में राइफल और मशीन गन निर्माण 3
- रामसर स्थल और विश्व पर्यावरण दिवस 5
- राजस्थान में जल संरक्षण के प्रयास 8
- राजस्थान की सांभर झील में फ्लेमिंगो 9
- रणथंभौर में अवैध खनन पर प्रतिबंध 10
- ग्रेट इंडियन बस्टर्ड 11
- राजस्थान में नया जल संचयन मॉडल 13
- राजस्थान में बनास नदी 14
- पोखरण में रुद्रास्त्र UAV का सफल परीक्षण 16
- दक्षिण-पश्चिम मानसून के कारण राजस्थान में भारी वर्षा 18
- AI के साथ पढ़ाई 19
- बीज महोत्सव 2025 20
- राजस्थान में MSME क्षेत्र की वृद्धि हेतु प्लग एंड प्ले सुविधा 21
- एल्बिनो गिलहरी 22

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 — SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस — SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स — SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप — SCAN ME

नोट :

राजस्थान

राजस्थान में राइफल और मशीन गन निर्माण

चर्चा में क्यों ?

'मेक इन इंडिया' और 'राइज़िंग राजस्थान' पहल के अंतर्गत, राजस्थान को 1,500 करोड़ रुपए से अधिक की रक्षा परियोजनाओं के लिये स्वीकृति प्राप्त हुई है।

- यह राज्य के रक्षा विनिर्माण क्षेत्र के लिये एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है, जो राजस्थान को भारत के रक्षा उत्पादन व निर्यात में एक प्रमुख भागीदार के रूप में स्थापित करता है।

मुख्य बिंदु

- **रक्षा विनिर्माण में राजस्थान की भूमिका:**
  - जोधपुर और जयपुर जैसे स्थानों पर गन के पुर्ज़ों का निर्माण किया जाएगा, जबकि बोरानाड़ा (जोधपुर) स्थित एक विशेषीकृत इकाई में बैरल का निर्माण किया जाएगा, जिससे विकेंद्रीकृत व अधोसंरचना-आधारित प्रणाली के माध्यम से आपूर्ति शृंखला की सुरक्षा सुनिश्चित होगी।
  - एक प्रमुख चुनौती गोला-बारूद भंडारण के लिये सुरक्षा मानकों का पालन करना है, जिसके अनुसार ऐसी इकाइयाँ आवासीय क्षेत्रों से 8–10 किमी की दूरी पर होनी चाहिये; इसके लिये सरकार से उपयुक्त भूमि आवंटन की माँग की जा रही है।
- **उन्नत हथियार प्रणालियाँ निर्माणाधीन**
  - **सैन्य-ग्रेड स्नाइपर राइफल:** यह पूरी तरह स्वदेशी हथियार **2.4 किमी** तक की दूरी पर सब-मिनट ऑफ एंगल (MOA) सटीकता के साथ लॉन्ग-रेंज प्रिसीजन के लिये डिज़ाइन किया गया है और विविध पर्यावरणीय परिस्थितियों में विश्वसनीय प्रदर्शन सुनिश्चित करता है।
  - **मल्टी-बैरल मशीन गन:** यह प्रति मिनट 6,000 राउंड की फायरिंग दर, **1,000 गज** की रेंज और **15,000 राउंड प्रति बेल्ट** क्षमता से लैस है। भविष्य में इसे C-RAM (**काउंटर रॉकेट, आर्टिलरी और मोर्टार**) तथा एंटी-एयरक्राफ्ट के लिये उन्नत किया जाएगा।
- **भारत की रक्षा पारिस्थितिकी तंत्र के लिये महत्त्व**
  - **'मेक इन इंडिया' के साथ समन्वय:** यह पहल रक्षा उत्पादन में आत्मनिर्भरता की भारत की परिकल्पना को साकार करती है, जिसमें पूरी तरह स्वदेशी और अत्याधुनिक हथियार प्रणालियों का निर्माण किया जा रहा है।
  - **विकेंद्रीकृत उत्पादन:** कई विनिर्माण केंद्रों के माध्यम से जोखिम में कमी, सुरक्षा में सुधार तथा क्षेत्रीय औद्योगिक अधोसंरचना का लाभ लेकर आपूर्ति शृंखला की लचीलापन और स्थायित्व सुनिश्चित किया जा रहा है।
  - **डिफेंस स्टार्ट-अप्स को बढ़ावा:** इस परियोजना में रक्षा स्टार्टअप्स की भागीदारी से नवाचार और निजी क्षेत्र की सक्रिय भूमिका को बल मिल रहा है।
  - **निर्यात की संभावना:** टोगो और थाईलैंड जैसे देशों से मिली प्रारंभिक रुचि, भारत को वैश्विक रक्षा आपूर्तिकर्त्ता बनाने की दिशा में सशक्त निर्यात संभावनाओं का संकेत देती है।
  - **मौजूदा रक्षा उत्पादन का पूरक:** उत्तर प्रदेश में ब्रह्मोस मिसाइल निर्माण की सफलता के बाद राजस्थान द्वारा छोटे हथियारों के निर्माण में प्रवेश, भारत की रक्षा उत्पादन क्षमताओं को विविधता प्रदान करता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

ब्रह्मोस मिसाइल

- ब्रह्मोस मिसाइल जिसकी रेंज 290 किमी. है, भारत-रूस का एक संयुक्त उद्यम है और यह मैक 2.8 (ध्वनि की गति से लगभग तीन गुना) की शीर्ष गति के साथ दुनिया की सबसे तेज़ क्रूज़ मिसाइल है।
    - ब्रह्मोस का नाम ब्रह्मपुत्र **(भारत) और मोस्कवा (रूस)** नदियों के नाम पर रखा गया है।
- यह दो चरणों वाली मिसाइल (पहले चरण में ठोस प्रणोदक इंजन और दूसरे चरण में तरल रैमजेट) है।
- यह एक मल्टीप्लेटफॉर्म मिसाइल है यानी इसे ज़मीन, हवा और समुद्र से लॉन्च किया जा सकता है तथा सटीकता के साथ बहु-क्षमता वाली मिसाइल है जो मौसम की स्थिति के बावजूद दिन और रात दोनों समय काम करती है।
- यह **"फायर एंड फॉरगेट्स"** सिद्धांत पर काम करती है यानी लॉन्च के बाद इसे मार्गदर्शन की आवश्यकता नहीं है।

- वियतनाम, संयुक्त अरब अमीरात और इंडोनेशिया ब्रह्मोस मिसाइल के अन्य संभावित ग्राहकों में से हैं।

'मेक इन इंडिया' पहल

- परिचय: इस अभियान को निवेश को सुविधाजनक बनाने, नवाचार एवं कौशल विकास को बढ़ावा देने, बौद्धिक संपदा की रक्षा करने तथा सर्वश्रेष्ठ विनिर्माण बुनियादी ढाँचे का निर्माण करने के लिये शुरू किया गया था।
- उद्देश्य:
    - विनिर्माण क्षेत्र की संवृद्धि दर को बढ़ाकर 12-14% प्रतिवर्ष करना।
    - वर्ष 2022 तक (संशोधित तिथि 2025) विनिर्माण से संबंधित 100 मिलियन अतिरिक्त रोज़गार सृजित करना।
    - वर्ष 2025 तक सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण क्षेत्र का योगदान बढ़ाकर 25% करना।
- **'मेक इन इंडिया' के स्तंभ:**
    - नई प्रक्रियाएँ: इसके तहत 'व्यापार करने में सुलभता' को उद्यमशीलता के लिये महत्त्वपूर्ण माने जाने के साथ स्टार्टअप्स और स्थापित उद्यमों के लिये कारोबारी माहौल में सुधार के उपायों को लागू किया गया।
    - नवीन बुनियादी ढाँचा: सरकार ने विश्व स्तरीय बुनियादी ढाँचा बनाने के लिये औद्योगिक गलियारों एवं स्मार्ट शहरों के विकास को प्राथमिकता दी।
        - इसके तहत सुव्यवस्थित पंजीकरण प्रणालियों और बेहतर बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) संबंधी बुनियादी ढाँचे के माध्यम से नवाचार और अनुसंधान को भी बढ़ावा दिया गया।
- मेक इन इंडिया 2.0: वर्तमान में चल रहा **"मेक इन इंडिया 2.0" चरण** (जिसमें 27 क्षेत्र शामिल हैं) इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाने के साथ वैश्विक विनिर्माण क्षेत्र में एक प्रमुख पहलू के रूप में भारत की भूमिका को मज़बूत कर रहा है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 — SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस — SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स — SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप — SCAN ME

रामसर स्थल और विश्व पर्यावरण दिवस

चर्चा में क्यों ?

विश्व पर्यावरण दिवस पर भारत ने दो और आर्द्रभूमियाँ—**फालोदी के खीचन और उदयपुर के मेनार**—को अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व की आर्द्र-भूमियों की रामसर सूची में शामिल किया।

- इन सम्मिलनों के साथ भारत में रामसर स्थलों की कुल संख्या 91 हो गई है।

विश्व पर्यावरण दिवस (WED)

- **इतिहास एवं परिचय:**
  - विश्व पर्यावरण दिवस की स्थापना वर्ष 1972 में स्टॉकहोम में आयोजित मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन के दौरान की गई थी।
    - उसी वर्ष बाद में, संयुक्त राष्ट्र महासभा ने आधिकारिक तौर पर 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के रूप में घोषित किया।
  - पहला उत्सव 1973 में "ओनली वन अर्थ" थीम के साथ मनाया गया, जो पर्यावरण जागरूकता के लिये सबसे बड़े वैश्विक मंच की शुरुआत थी।
  - वर्ष 2021 में WED समारोह ने पारिस्थितिकी तंत्र बहाली पर संयुक्त राष्ट्र दशक (2021-2030) की शुरुआत की, जो वनों से लेकर खेतों तक, पहाड़ों की चोटियों से लेकर समुद्र की गहराई तक अरबों हेक्टेयर भूमि को पुनर्जीवित करने का एक वैश्विक मिशन है।
- **WED 2025:**
  - कोरिया गणराज्य विश्व पर्यावरण दिवस 2025 की मेज़बानी कर रहा है जिसका फोकस वैश्विक स्तर पर प्लास्टिक प्रदूषण को समाप्त करने पर है।
  - वर्ष 2025 की थीम है **"बीट प्लास्टिक पॉल्यूशन"**, जो प्लास्टिक अपशिष्ट को कम करने पर वैश्विक ध्यान केंद्रित करता है।
  - भारत ने वर्ष 2018 में 'बीट प्लास्टिक पॉल्यूशन' थीम के अंतर्गत विश्व पर्यावरण दिवस के 45 वें समारोह की मेज़बानी की थी।

प्रमुख बिंदु

- **खीचन आर्द्रभूमि:**
  - **परिचय:**
    - यह राजस्थान के जैसलमेर शहर से लगभग 171 किमी दूर खीचन गाँव में स्थित है।
    - इसमें दो जल निकाय, रात्रि नदी और विजयसागर तालाब, तटवर्ती आवास और झाड़ीदार भूमि शामिल हैं।
  - **प्रवासी पक्षी आवास:**
    - अभयारण्य में तीन प्रवासी पक्षी प्रजातियाँ पाई जाती हैं: कुरजन, करकरा और कुंच, जिन्हें स्थानीय रूप से डेमोइसेल क्रेन के नाम से जाना जाता है ।
- खीचन पक्षी अभयारण्य विश्व स्तर पर "डेमोइसेल क्रेन गाँव" के रूप में प्रसिद्ध है, जो विश्व भर से पक्षी प्रेमियों और शोधकर्त्ताओं को आकर्षित करता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- ये पक्षी दक्षिण-पश्चिम यूरोप, काला सागर, पोलैंड, यूक्रेन, कज़ाकिस्तान, मंगोलिया और उत्तरी तथा दक्षिणी अफ्रीका के कुछ हिस्सों से खीचन की ओर प्रवास करते हैं।

- **मेनार आर्द्रभूमि:**
  - **परिचय:**
    - मेनार आर्द्रभूमि राजस्थान के उदयपुर में स्थित एक मीठे जल की मानसून आर्द्रभूमि परिसरों में से एक है।
    - यह आर्द्रभूमि तीन आपस में जुड़े तालाबों—ब्रह्म तालाब, धंद तालाब, और खेड़ोड़ा तालाब—के साथ-साथ धंद और खेड़ोड़ा को जोड़ने वाली कृषि भूमि से मिलकर बनती है।
    - मानसून के दौरान, आसपास के खेतों में बाढ़ आ जाती है, जिससे जल पक्षियों के लिये अतिरिक्त आवास बन जाता है।
- **जैवविविधता और प्रमुख प्रजातियाँ:**
  - यह स्थल विविध पक्षी जीवन का समर्थन करता है, जिसमें अति संकटग्रस्त व्हाइट बैक्ड वल्चर (Gyps bengalensis) और लॉन्ग-बिल्ड वल्चर (Gyps indicus) शामिल हैं।
  - इसमें 70 से अधिक पादप प्रजातियाँ भी हैं, जिनमें ब्रह्म तालाब के पास आम के वृक्ष (मैंगीफेरा इंडिका) भी शामिल हैं।
    - आम के वृक्ष इंडियन फ्लाइंग फॉक्स (*Pteropus giganteus*) की एक बड़ी कॉलोनी के लिये आश्रय स्थल के रूप में काम करते हैं, जिससे आर्द्रभूमि की पारिस्थितिक समृद्धि में वृद्धि होती है।
  - **समुदाय-प्रेरित संरक्षण का मॉडल:**
    - इसे राजस्थान में समुदाय-संचालित संरक्षण के बेहतरीन उदाहरणों में से एक माना जाता है।
    - मेनार गाँव के निवासी वन्यजीवों की सुरक्षा में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा क्षेत्र में अवैध शिकार और मत्स्यन को रोकने के लिये सक्रिय रूप से काम करते हैं।
- **रामसर अभिसमय**
  - **परिचय:**
    - रामसर अभिसमय एक अंतर्राष्ट्रीय संधि है जिस पर वर्ष 1971 में ईरान के रामसर में यूनेस्को के तत्वावधान में हस्ताक्षर किये गये थे, जिसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व की आर्द्रभूमियों का संरक्षण करना है।
- भारत में यह अधिनियम **1 फरवरी 1982** को लागू हुआ, जिसके तहत अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व की आर्द्रभूमियों को रामसर स्थल घोषित किया गया।
- अगस्त 2024 तक, तमिलनाडु (18) में रामसर स्थलों की संख्या सबसे अधिक है, उसके बाद उत्तर प्रदेश (10) का स्थान है।
    - मॉन्ट्रेक्स रिकॉर्ड अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व के उन आर्द्रभूमि स्थलों का रजिस्टर है, जहाँ तकनीकी विकास, प्रदूषण या अन्य मानवीय हस्तक्षेप के परिणामस्वरूप पारिस्थितिक चरित्र में परिवर्तन हुए हैं, हो रहे हैं या होने की संभावना है।
- इसे रामसर सूची के भाग के रूप में रखा गया है।
  - **रामसर स्थलों की पहचान के लिये मानदंड:**
    - वर्तमान में, अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व की आर्द्रभूमियों की पहचान के लिये नौ मानदंड हैं, जिनमें प्रतिनिधि, दुर्लभ या अद्वितीय आर्द्रभूमि प्रकार वाले स्थल; जैवविविधता के संरक्षण के लिये अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व के स्थल; जलपक्षियों, मछलियों आदि पर आधारित विशिष्ट मानदंड शामिल हैं।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025
SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस
SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स
SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप
SCAN ME

रामसर अभिसमय (RAMSAR CONVENTION)

परिचयः

- इसे आर्द्रभूमियों पर अभिसमय के रूप में भी जाना जाता है।
- यह एक अंतर-सरकारी संधि है जिसे वर्ष 1971 में रामसर, ईरान में अपनाया गया।
- वर्ष 1975 में इसे लागू किया गया।
- ऐसी आर्द्रभूमियों को रामसर स्थल घोषित किया जाता है जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महत्त्व रखती हों।
- **विश्व का सबसे बड़ा रामसर स्थलः** पैंटानल, दक्षिण अमेरिका।

मोंट्रेक्स रिकॉर्डः

- वर्ष 1990 में मोंट्रेक्स (स्विटजरलैंड) में इसे अपनाया गया।
- यह उन रामसर स्थलों की पहचान करता है जिनके संरक्षण हेतु राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्राथमिकता के साथ ध्यान देने की आवश्यकता है।

आर्द्रभूमियाँः

- आर्द्रभूमि एक ऐसा स्थान है जहाँ भूमि मौसमी अथवा स्थायी रूप से जल (खारा या मीठा/ताजा अथवा इन दोनों के बीच की स्थिति) से ढकी होती है।
- यह नदियों, दलदल, मैंग्रोव, कीचड़ युक्त भूमि, तालाबों, जलमग्न स्थान, बिलबोंग (नदी की वह शाखा जो आगे चलकर समाप्त हो गई हो), लैगून, झीलों और बाढ़ के मैदानों सहित विभिन्न रूपों में हो सकती है।
- **विश्व आर्द्रभूमि दिवसः** 2 फरवरी

भारत और रामसर अभिसमयः

- भारत में रामसर अभिसमय वर्ष 1982 में लागू हुआ।
- **रामसर स्थलों की कुल संख्याः** 75
- चिल्का झील (ओडिशा), केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (राजस्थान), हरिके झील (पंजाब), लोकटक झील (मणिपुर), वुलर झील (जम्मू और कश्मीर) आदि।
- **भारत में संबंधित फ्रेमवर्क**
  - आर्द्रभूमियों के संरक्षण तथा प्रबंधन हेतु पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 के प्रावधानों के तहत 'आर्द्रभूमि (संरक्षण और प्रबंधन) अधिनियम, 2017' को अधिसूचित किया है।
  - ये नियम आर्द्रभूमियों के प्रबंधन को विकेंद्रीकृत करते हैं तथा राज्य आर्द्रभूमि प्राधिकरण या केंद्रशासित प्रदेश आर्द्रभूमि प्राधिकरण के गठन का प्रावधान करते हैं।

प्रमुख तथ्य

- **भारत में सबसे बड़ा रामसर स्थलः** सुंदरबन, पश्चिम बंगाल
- **भारत में सबसे छोटा रामसर स्थलः** वेम्बन्नूर आर्द्रभूमि कॉम्प्लेक्स, तमिलनाडु
- **सर्वाधिक रामसर स्थल वाला राज्यः** तमिलनाडु (14)
- **मोंट्रेक्स रिकॉर्ड में शामिल आर्द्रभूमियाँः**
  - केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान, राजस्थान
  - लोकटक झील, मणिपुर

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 — SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस — SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स — SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप — SCAN ME

नोट :

राजस्थान में जल संरक्षण के प्रयास

चर्चा में क्यों ?

विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून 2025) पर राजस्थान ने पारंपरिक जल स्रोतों को बहाल करने, जल संचयन संरचनाओं के निर्माण, भूजल पुनर्भरण और बाँधों तथा नहरों की मरम्मत पर ध्यान केंद्रित करते हुए दो सप्ताह का जल संरक्षण अभियान शुरू किया।

मुख्य बिंदु

- **अभियान के बारे में:**
  - मुख्यमंत्री ने राजस्थान इंटरनेशनल सेंटर में जल संरक्षण अभियान का उद्घाटन किया और जन भागीदारी का आग्रह किया तथा जलवायु परिवर्तन से निपटने की नैतिक ज़िम्मेदारी पर प्रकाश डाला।
  - जयपुर के निकट रामगढ़ बाँध के जीर्णोद्धार के लिये श्रमदान कार्यक्रम आयोजित किया गया, साथ ही बूँदी ज़िले के केशोरायपाटन में चंबल नदी के तट पर नई जल संरक्षण परियोजनाओं का शुभारंभ भी किया गया।
- **संरक्षण परियोजनाएँ: 345 करोड़ रुपए** की जल संरक्षण परियोजनाओं का शिलान्यास किया जाएगा।
  - अभियान में पारंपरिक जल स्रोतों की सफाई, श्रमदान शिविर और वृक्षारोपण अभियान शामिल होंगे।
- **जलवायु एवं पर्यावरण पहल के लिये समझौता ज्ञापन:**
  - जलवायु परिवर्तन अनुकूलन योजना 2030 तैयार करने के लिये राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड और विज्ञान एवं पर्यावरण केंद्र, नई दिल्ली के बीच एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किये गए।
  - उत्सर्जन व्यापार योजना को लागू करने तथा अलवर और भिवाड़ी के लिये पूर्व चेतावनी प्रणाली स्थापित करने के लिये अतिरिक्त समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किये गए।
- **राजस्थान में पारंपरिक जल ज्ञान:**
  - राजस्थान में लोग ऐतिहासिक रूप से जल संरक्षण के लिये बावड़ी, जोहड़, तालाब और कुओं जैसे अद्वितीय तरीकों का उपयोग करते हैं।
  - राज्य सरकार ने इन पारंपरिक प्रथाओं को पुनर्जीवित करने के लिये प्रत्येक ज़िले में कम-से-कम **125 जल संरक्षण संरचनाओं** का निर्माण करने की प्रतिबद्धता जताई है।

राजस्थान की जल संचयन प्रणालियाँ

जल संचयन प्रणाली	विवरण
बावली	मेहराब, नक्काशीदार आकृतियाँ और कमरों के साथ सीढ़ीनुमा संरचना। कम वर्षा वाले क्षेत्रों में शहरी जल भंडारण का अभिन्न अंग।
झलारा	आयताकार सीढ़ीनुमा जलस्रोत, जिनमें तीन या चार ओर से स्तरित सीढ़ियाँ होती हैं। ये जलाशयों या झीलों से जल एकत्र करने के लिये बनाए जाते हैं।
टांका (Taanka)	छतों या जलग्रहण क्षेत्रों से वर्षा जल एकत्र करने के लिये बनाया गया बेलनाकार भूमिगत गड्ढा।
खड़ीन (ढोरा)	पहाड़ी ढलानों पर लंबे मिट्टी के तटबंध, जो कृषि के लिये सतही जल को एकत्र करते हैं।
कुंडी (Kundi)	गहरे, गोल या आयताकार गड्ढे की संरचना, जो शुष्क और अर्द्ध-शुष्क क्षेत्रों में जहाँ जल दुर्लभ होता है तथा वर्षा अनिश्चित होती है, अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

राजस्थान की सांभर झील में फ्लेमिंगो

चर्चा में क्यों ?

फ्लेमिंगो सामान्यतः नवंबर से मार्च के बीच सांभर झील में प्रवास करते हैं, लेकिन वर्ष **2025 में भोजन की प्रचुरता** और जलवायु परिस्थितियों में बदलाव के कारण, अनुकूल आवास मिलने पर वे यहाँ असामान्य रूप से अधिक समय तक रुके।

मुख्य बिंदु

- **पक्षी जनसंख्या में उल्लेखनीय वृद्धि:**
  - जनवरी 2025 में की गई गणना में सांभर झील में **1.04 लाख से अधिक** प्रवासी पक्षी दर्ज किये गए, जिनमें बड़ी संख्या में छोटे और बड़े फ्लेमिंगो भी शामिल थे, जो वर्ष **2024 में दर्ज 7,147 पक्षियों** की तुलना में काफी अधिक है।
  - यह बेहतर पर्यावरणीय परिस्थितियों को दर्शाता है, जिससे प्रवासी प्रजातियों के लिये एक महत्त्वपूर्ण विश्रामस्थल और भोजनस्थल के रूप में झील की भूमिका बढ़ गई है।
  - भारत में प्रतिवर्ष **250 से अधिक प्रवासी पक्षी प्रजातियाँ** आती हैं, जिनके प्रमुख स्थलों में चिल्का झील, खीचन और भरतपुर शामिल हैं।

फ्लेमिंगो

- **परिचय:** यह फोनीकोप्टेरिडे (Phoenicopteridae) परिवार से संबंधित है।
  - फ्लेमिंगो की छह प्रजातियाँ हैं, जिनके नाम हैं ग्रेटर फ्लेमिंगो (गुजरात का राज्य पक्षी), चिली फ्लेमिंगो, लेसर फ्लेमिंगो, कैरेबियन फ्लेमिंगो, एंडियन फ्लेमिंगो और पुना फ्लेमिंगो, जो अमेरिका, अफ्रीका, एशिया और यूरोप की झीलों, कीचड़युक्त भूमियों और उथले लैगूनों में पाए जाते हैं।

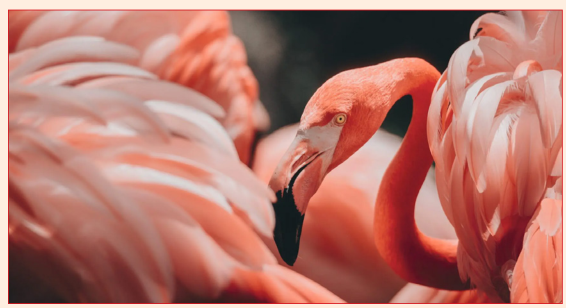

- **विशिष्ट स्वरूप:** अपने चमकीले गुलाबी पंखों के लिये जाने जाने वाले फ्लेमिंगो के पैर और गर्दन लंबे होते हैं, पैर जालीदार होते हैं तथा नीचे की ओर मुड़ी हुई विशिष्ट चोंच होती है, जो फिल्टर-फीडिंग हेतु अनुकूलित होती है।
  - फ्लेमिंगो के आवास और भोजन के स्रोत स्थान तथा मौसम के अनुसार बदलते रहते हैं, जिसके कारण उनका रंग गहरे या चमकीले गुलाबी से लेकर नारंगी, लाल या शुद्ध सफेद तक होता है।
- **अनुकूलन:** फ्लेमिंगो ने उच्च लवणता और तापमान वाले चरम वातावरण के लिये अनुकूलन कर लिया है, जहाँ उनके शिकारी सीमित हैं।
- **पारिस्थितिक भूमिका:** वे अपने आहार संबंधी गतिविधियों के माध्यम से अपने आवास के स्वास्थ्य को बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण पारिस्थितिक भूमिका निभाते हैं, जो पोषक चक्रण और शैवाल आबादी को प्रभावित करता है।
- **संरक्षण की स्थिति:**
  - IUCN रेड लिस्ट:
    - **सुभेद्यता:** एंडियन फ्लेमिंगो
    - **निकट संकटग्रस्त:** लेसर फ्लेमिंगो, पुना फ्लेमिंगो और चिली फ्लेमिंगो
  - CITES: परिशिष्ट II
  - वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972: अनुसूची II

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- **सांभर झील का पारिस्थितिक महत्त्व:**
  - सांभर झील, मध्य एशियाई फ्लाईवे पर स्थित एक महत्त्वपूर्ण पड़ाव है, जो विश्व के प्रमुख पक्षी प्रवास मार्गों में से एक है।
  - यह एक खारी आर्द्रभूमि है, जो राजस्थान के नागौर और जयपुर ज़िलों में अरावली पहाड़ियों से घिरी हुई है।
    - यह राजस्थान के अधिकांश नमक उत्पादन का स्रोत भी है।
  - इसके पारिस्थितिक महत्त्व के कारण इसे वर्ष **1990 में** रामसर स्थल घोषित किया गया।

रणथंभौर में अवैध खनन पर प्रतिबंध

चर्चा में क्यों ?

सर्वोच्च न्यायालय ने राजस्थान सरकार को रणथंभौर टाइगर रिज़र्व के कोर क्षेत्र में तत्काल खनन पर प्रतिबंध लगाने तथा रिज़र्व के भीतर मंदिरों में आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या को नियंत्रित करने के लिये एक समिति गठित करने का आदेश दिया है।

मुख्य बिंदु

- **वन्य जीवन के लिये गंभीर ख़तरा:**
  - केंद्रीय अधिकार प्राप्त समिति (CEC) द्वारा दायर आवेदन में कई मुद्दे उठाए गए:
    - उलियाना गाँव के निकट भारी मशीनरी का उपयोग कर लगभग **150 हेक्टेयर भूमि** पर अवैध खनन किया जा रहा है।
    - अनधिकृत निर्माण, रिज़र्व के अंदर त्रिनेत्र गणेश मंदिर के आसपास वाहनों और मानव की अत्यधिक उपस्थिति।
- **न्यायालय की टिप्पणियाँ:**
  - **खनन पर कानूनी चिंताएँ:**
    - न्यायालय ने वन्यजीव संरक्षण अधिनियम, 1972 का उल्लंघन करते हुए संरक्षित क्षेत्र में खनन की अनुमति देने के लिये राज्य प्राधिकारियों की आलोचना की।
    - बाघ संरक्षण योजना बाघों के मुख्य आवासों के अंदर किसी भी प्रकार के खनन, निजी वाहनों की आवाजाही या निर्माण पर प्रतिबंध लगाती है।
  - **तीन सदस्यीय समिति का गठन:**
    - सरिस्का बाघ अभयारण्य में इसी तरह की स्थिति को देखते हुए, पीठ ने रणथंभौर में समस्याओं के समाधान के लिये तीन सदस्यीय समिति के गठन का आदेश दिया।
  - **सरिस्का के मॉडल के आधार पर न्यायालय का सुझाव:**
    - निर्दिष्ट प्रवेश बिंदुओं पर निजी वाहनों पर प्रतिबंध लगाया जाए,
    - श्रद्धालुओं को त्रिनेत्र गणेश मंदिर तक ले जाने के लिये इलेक्ट्रिक शटल बसों का उपयोग किया जाए।
- **रणथंभौर टाइगर रिज़र्व के बारे में:**
  - रणथम्भौर को वर्ष **1955 में वन्यजीव अभयारण्य**, वर्ष **1973 में** प्रोजेक्ट टाइगर के तहत टाइगर रिज़र्व तथा वर्ष **1980 में राष्ट्रीय उद्यान के रूप में अधिसूचित किया गया।**
  - यह अरावली एवं विंध्य पर्वत शृंखलाओं के मिलन बिंदु पर तथा सात नदी प्रणालियों के संगम पर स्थित है, जो इसे पारिस्थितिक रूप से अद्वितीय और अत्यधिक जैवविविधतापूर्ण बनाता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

- इसमें रणथंभौर राष्ट्रीय उद्यान के साथ-साथ सवाई मानसिंह और कैलादेवी अभयारण्य (**Kailadevi sanctuaries**) भी शामिल हैं।
- रणथंभौर किला, जिसके नाम से जंगलों का नाम पड़ा है, के बारे में कहा जाता है कि इसका इतिहास 1000 वर्ष से भी ज़्यादा पुराना है। यह उद्यान के भीतर 700 फीट ऊँची पहाड़ी पर रणनीतिक रूप से स्थित है।

- **विशेषताएँ:**
  - इस रिज़र्व में अत्यधिक खंडित वन क्षेत्र, खड्ड, नदी-नाले और कृषि भूमि शामिल हैं।
  - यह कैलादेवी वन्यजीव अभयारण्य के कुछ हिस्सों, चंबल के खड्डों वाले आवासों और श्योपुर के वन क्षेत्रों के माध्यम से मध्य प्रदेश के कुनो-पालपुर परिदृश्य से जुड़ा हुआ है।
  - चंबल नदी की सहायक नदियाँ बाघों को कुनो राष्ट्रीय उद्यान की ओर जाने के लिये आसान मार्ग प्रदान करती हैं।

सरिस्का बाघ अभयारण्य

- **परिचय:** सरिस्का बाघ अभयारण्य अरावली पर्वतमाला में स्थित है, जो राजस्थान के अलवर ज़िले का एक हिस्सा है।
  - सरिस्का को वर्ष 1955 में एक वन्यजीव अभयारण्य घोषित किया गया था और बाद में वर्ष 1978 में इसे बाघ अभयारण्य घोषित किया गया, जिसके बाद से यह भारत के प्रोजेक्ट टाइगर का हिस्सा बन गया।
  - इस अभयारण्य में खंडहर हो चुके मंदिर, किले, छत्र और एक महल स्थित हैं।
- कंकरवाड़ी किला अभयारण्य के केंद्र में स्थित है और कहा जाता है कि मुगल सम्राट औरंगज़ेब ने सिंहासन के उत्तराधिकार के संघर्ष में अपने भाई दारा शिकोह को इस किले में कैद कर लिया था।
- इस अभयारण्य में पांडुपोल में पांडवों से संबंधित भगवान हनुमान का एक प्रसिद्ध मंदिर भी है।
- **वनस्पति और जीव:**
  - इसके तहत चट्टानी रुपी आकृति के साथ अर्द्ध शुष्क काँटेदार वन, घास के मैदान, चट्टानें एवं अर्द्ध-पर्णपाती वन शामिल हैं।
  - इसमें ढोक वृक्ष, सालार, कदया, गोल, बेर, बरगद, बाँस, कैर आदि प्रमुख हैं।
  - यहाँ पर रॉयल बंगाल टाइगर, तेंदुए, साँभर, चीतल, नीलगाय, चार सींग वाले मृग, जंगली सुअर, लकड़बग्घे एवं जंगली बिल्लियों जैसे विभिन्न जीव-जंतु भी पाए जाते हैं।

ग्रेट इंडियन बस्टर्ड

चर्चा में क्यों?

राजस्थान वन विभाग ने ऑपरेशन सिंदूर और इसमें शामिल सैन्य कर्मियों के सम्मान में नवजात ग्रेट इंडियन बस्टर्ड (अर्डियोटिस नाइग्रिसेप्स) चूजों का नाम सिंदूर, व्योम, मिश्री और सोफिया रखा।

मुख्य बिंदु

- **ग्रेट इंडियन बस्टर्ड के बारे में:**
  - राजस्थान का राज्य पक्षी ग्रेट इंडियन बस्टर्ड भारत का सबसे गंभीर रूप से संकटग्रस्त पक्षी माना जाता है। यह विश्व स्तर पर उड़ने वाले सबसे भारी पक्षियों में से एक है तथा यह मुख्य रूप से राजस्थान के थार रेगिस्तान में पाया जाता है। कम संख्या में यह गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश में मिलते हैं।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- ग्रेट इंडियन बस्टर्ड भारत में पाई जाने वाली चार बस्टर्ड प्रजातियों में से एक है, जिसमें लेसर फ्लोरिकन, बंगाल फ्लोरिकन और मैकक्वीन बस्टर्ड भी शामिल हैं।
- फ्रंटल विज़न के अभाव के कारण ग्रेट इंडियन बस्टर्ड की विद्युत लाइनों से टकराने की अधिक संभावना रहती है।

- **पारिस्थितिकी महत्त्व:** ग्रेट इंडियन बस्टर्ड एक संकेतक प्रजाति है तथा यह पक्षी चरागाह पारिस्थितिकी तंत्र के बेहतर स्वास्थ्य का परिचायक है। इनकी संख्या में कमी स्थानीय घास के मैदानों के क्षरण का संकेतक है।
- **संरक्षण स्थिति:** **IUCN रेड लिस्ट (गंभीर रूप से संकटग्रस्त)**, **CITES (परिशिष्ट 1)**, प्रवासी प्रजातियों पर अभिसमय (CMS) (परिशिष्ट I) और वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972 (अनुसूची I)।
- **खतरे:** कृषि, खनन और बुनियादी ढाँचे से इनके अधिवास की क्षति के साथ विद्युत लाइनों से टकराव (मृत्यु दर का प्रमुख कारण) इनके लिये प्रमुख खतरा है।
  - इनके अवैध शिकार में कमी आई है लेकिन मानवीय गतिविधियों एवं असंतुलित भूमि उपयोग से इस प्रजाति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा है।
- **संरक्षण प्रयास:** इसके संरक्षण की दिशा में वर्ष 2018 में पर्यावरण मंत्रालय, भारतीय वन्यजीव संस्थान और राजस्थान वन विभाग ने प्रोजेक्ट ग्रेट इंडियन बस्टर्ड की शुरुआत की।
  - जैसलमेर के सुदासरी और साम स्थित कैप्टिव ब्रीडिंग सेंटर्स में नवजात ग्रेट इंडियन बस्टर्ड की जीवन दर में सुधार के क्रम में AI-सक्षम निगरानी, इनक्यूबेटर तथा सेंसर-आधारित प्रणालियों का उपयोग किया जा रहा है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

ऑपरेशन सिंदूर

- **परिचय:** यह पहलगाम आतंकी हमले के प्रत्युत्तर में 7 मई, 2025 को भारतीय सशस्त्र बलों द्वारा लॉन्च किया गया एक समन्वित स्ट्राइक ऑपरेशन है।
    - इसे भारतीय भू-भाग से सेना, नौसेना और वायु सेना के समन्वित प्रयासों द्वारा कार्यान्वित किया गया।
    - पिछले अभियानों के आक्रामक और शक्ति प्रदर्शन पर केंद्रित नामों के विपरीत, इस अभियान का नाम पीड़ितों, विशेषकर पहलगाम हमले की विधवाओं, के प्रति व्यक्तिगत श्रद्धांजलि स्वरूप चुना गया था।
- **लक्ष्य:** 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत भारतीय सशस्त्र बलों ने पाकिस्तान और पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (PoK) में स्थित जैश-ए-मोहम्मद, **लश्कर-ए-तैयबा और हिजबुल मुजाहिदीन से संबद्ध आतंकी ठिकानों** को लक्षित किया।
    - इन हमलों का उद्देश्य भारत के खिलाफ हमलों की योजना बनाने में इस्तेमाल किये गए आतंकवादी ठिकानों को नष्ट करना था।

राजस्थान में नया जल संचयन मॉडल

चर्चा में क्यों ?

राजस्थान के शुष्क भूभाग में जयपुर के कूकस गाँव में 50 **जलवायु-अनुकूल कृषि तालाबों** का उपयोग करते हुए एक नए जल संरक्षण मॉडल का लक्ष्य 10 **करोड़ लीटर वर्षा जल** का संरक्षण करके किसानों को लाभान्वित करना है।

नोट: **IIT खड़गपुर** की पूर्व छात्रा और नीति आयोग की पूर्व अधिकारी इस पहल का नेतृत्व कर रहे हैं तथा उन्होंने स्थानीय सभाओं तथा रैलियों के माध्यम से दौसा में जागरूकता अभियान चलाया है।

मुख्य बिंदु

- **वर्षा जल संचयन मॉडल के बारे में:**
    - जयपुर के आमेर ब्लॉक में कूकस ग्राम पंचायत को इस वर्षा जल संचयन पहल के लिये चुना गया राजस्थान का दूसरा स्थान है।
        - यह परियोजना दौसा ज़िले में मिली सफलता के बाद शुरू की गई है, जहाँ 250 **कृषि तालाबों** के निर्माण से किसानों को वर्षा आधारित भूमि पर बारहमासी फसलें उगाने में मदद मिली।
    - इस पहल में प्रत्येक किसान की **5% भूमि** पर सुरक्षित बाड़ लगाकर 10 **फुट गहरे**, प्लास्टिक से बने तालाबों का निर्माण करना शामिल है।
- **भविष्य की योजनाएँ और प्रभाव:**
    - इस पहल में पहले ही **50 तालाब** बनाए जा चुके हैं और अब इसमें **25 तथा तालाब** बनाने की योजना है।
    - इस विस्तार से क्षेत्र के लगभग **50,000 ग्रामीणों** को लंबे समय में लाभ मिलने की उम्मीद है।
- **महत्त्व:**
    - **स्थिरता और फसल विविधीकरण:** यह पहल वर्ष भर जल आपूर्ति उपलब्ध कराने पर केंद्रित है, जिससे किसानों को रबी और खरीफ दोनों फसलों को उगाने में मदद मिलेगी तथा वे मूँगफली तथा चौला जैसी अधिक जल-कुशल और लाभदायक फसलों की खेती में भी विविधता ला सकेंगे।
    - **भूजल पुनर्भरण:** तालाबों को न केवल सिंचाई प्रदान करने के लिये डिज़ाइन किया गया है, बल्कि भूजल को पुनर्भरण करने में भी मदद करता है, जो अंबर ब्लॉक जैसे क्षेत्रों में एक आवश्यक संसाधन है जहाँ नदी या नहर नेटवर्क का अभाव है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- **आजीविका संवर्द्धन:** निरंतर जल आपूर्ति से टिकाऊ पशुधन पालन और उच्च मूल्य बागवानी की सुविधा मिलती है, जिससे इस क्षेत्र में डेयरी फार्मिंग तथा खाद्य प्रसंस्करण इकाइयों के लिये अवसर सृजित होते हैं।

- **जयपुर ज़िले में भूजल संकट:**
  - जयपुर की **99.4%** कृषि योग्य भूमि सिंचाई के लिये भूजल पर निर्भर है। ज़िले में प्राकृतिक पुनर्भरण की दर से 2.22 गुना अधिक पानी निकाला जाता है, जो गंभीर भूजल संकट को दर्शाता है।
- **राजस्थान में भूजल का अत्यधिक दोहन:**
  - केंद्रीय भूजल बोर्ड (CGWB) के अनुसार, वर्ष **2023 में राजस्थान** ने अपने वार्षिक भूजल पुनर्भरण का 149% निकाल लिया, जो पंजाब (156%) के बाद भारत में दूसरा सबसे अधिक है।
  - वर्षा द्वारा पुनर्भरित प्रत्येक **1 लीटर जल पर 1.49 लीटर** जल निकाला गया, जिसके परिणामस्वरूप भूजल में अत्यधिक कमी आई।
- **जैसलमेर:** सर्वाधिक प्रभावित ज़िला
  - जैसलमेर अत्यधिक दोहन के चार्ट में सबसे ऊपर रहा, जहाँ प्रत्येक 1 लीटर पुनर्भरण पर **3.56 लीटर भूजल** निकाला गया, जिससे इसके प्राचीन जलभृतों को गंभीर खतरा उत्पन्न हो गया है।
- **जयपुर:** एक गंभीर भूजल क्षेत्र
  - जयपुर ज़िले के सभी 16 ब्लॉक अत्यधिक दोहन की श्रेणी में हैं; ज़िले ने वर्ष **2023 में प्रति 1 लीटर पुनर्भरण पर 2.22 लीटर** जल निकाला गया।
  - लगभग औसत वर्षा के बावजूद, वर्ष **2024 में जयपुर में भूजल उपयोग 7-10%** तक बढ़ गया, जिससे भूजल क्षय और बढ़ गया।
- **भूजल पुनर्भरण और निष्कर्षण:**
  - राजस्थान का वार्षिक भूजल पुनर्भरण अनुमानतः **12.58 बिलियन क्यूबिक मीटर (BCM)** है।
  - हालाँकि, वर्ष **2023 में कुल निष्कर्षण** 17.05 BCM तक पहुँच गया, जो पुनर्भरण क्षमता से कहीं अधिक है।
  - निष्कर्षण योग्य भूजल संसाधन का आकलन **11.37 BCM** किया गया, जो उपयोग और उपलब्धता के बीच अस्थायी अंतर को उजागर करता है।

राजस्थान में बनास नदी

चर्चा में क्यों?

राजस्थान के टोंक ज़िले में बनास नदी में डूबने से कई लोगों की मौत हो गई।

मुख्य बिंदु

- **बनास नदी के बारे में:**
- **स्थान और उत्पत्ति:**
  - बनास नदी भारत के उत्तर-पश्चिमी राज्य राजस्थान में स्थित है।
  - इसका उद्गम अरावली पहाड़ियों में कुंभलगढ़ के पास होता है।
- **प्रवाह और मार्ग:**
  - यह नदी उत्तर-पूर्व दिशा में मैदानों की ओर बहती है तथा अंततः श्योपुर के उत्तर में चंबल नदी में मिल जाती है।
  - इसकी कुल लंबाई लगभग **500 किमी (310 मील)** है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 — SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस — SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स — SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप — SCAN ME

- **मौसमी प्रकृति और उपयोग:**
  - बनास एक मौसमी नदी है, जो गर्मी के महीनों में प्राय: सूख जाती है।
  - इसके बावजूद, यह क्षेत्र में सिंचाई का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है।
- **सहायक नदियाँ:**
  - बनास नदी की मुख्य सहायक नदियाँ बेराच नदी और कोटारी नदी हैं।
- **बाँध:**
  - बिसलपुर बाँध बनास नदी पर स्थित है। यह एक गुरुत्व बाँध (gravity dam) है, जिसे सिंचाई तथा पेयजल आपूर्ति के उद्देश्य से बनाया गया है।
    - गुरुत्व बाँध कंक्रीट या पत्थर व ईंटों से बना होता है और यह जल के दाब का सामना अपने ही भार से करता है। इसकी स्थिरता पूरी तरह गुरुत्व बल पर निर्भर करती है।

चंबल नदी

- चंबल नदी विंध्य पर्वत (इंदौर, मध्य प्रदेश) की उत्तरी ढलानों में सिंगार चौरी चोटी से निकलती है। वहाँ से यह मध्य प्रदेश में उत्तर दिशा में लगभग **346 किलोमीटर की लंबाई तक बहती है और फिर** राजस्थान से होकर **225 किलोमीटर** की लंबाई तक उत्तर-पूर्व दिशा में बहती है।

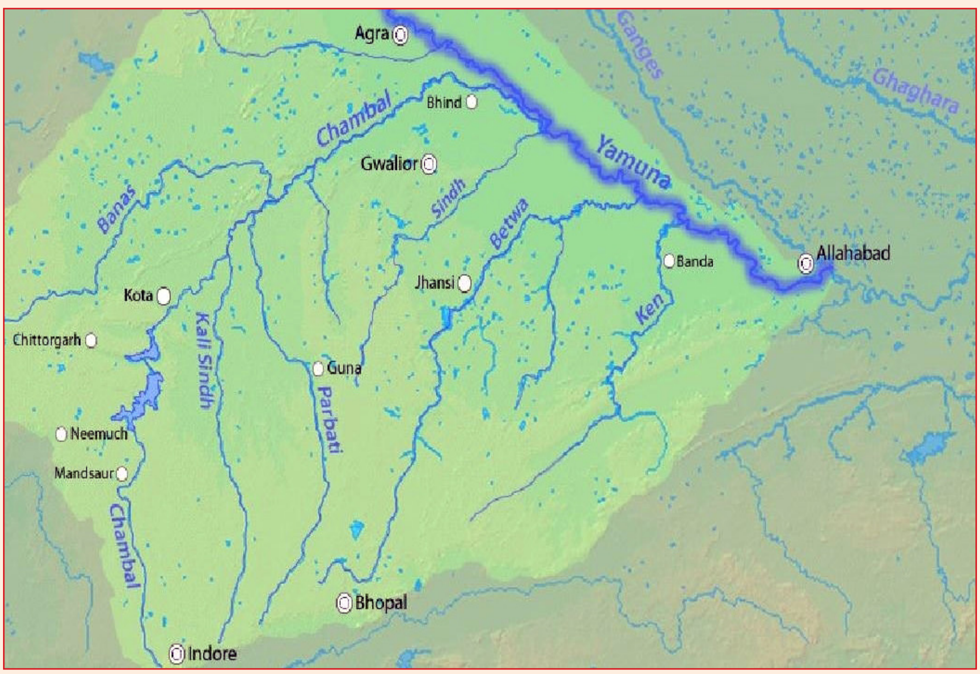

- यह नदी उत्तर प्रदेश में प्रवेश करती है और इटावा ज़िले में यमुना नदी में मिलने से पहले लगभग 32 किमी. तक बहती है।
- यह एक बरसाती नदी है और इसका बेसिन विंध्य पर्वत श्रृंखलाओं तथा अरावली से घिरा हुआ है। चंबल और इसकी सहायक नदियाँ उत्तर-पश्चिमी मध्य प्रदेश के मालवा क्षेत्र को जल से भरती हैं।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- राजस्थान में हाड़ौती पठार मेवाड़ मैदान के दक्षिण-पूर्व में चंबल नदी के ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र में स्थित है।
- **सहायक नदियाँ:** बनास, काली सिंध, शिप्रा (क्षिप्रा), पारबती, आदि।
- मुख्य विद्युत परियोजनाएँ/बाँध: गांधी सागर बाँध, **राणा प्रताप सागर बाँध,** जवाहर सागर बाँध और कोटा बैराज।
- राष्ट्रीय चंबल अभयारण्य राजस्थान, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के त्रि-जंक्शन पर चंबल नदी के किनारे स्थित है।
- यह गंभीर रूप से लुप्तप्राय घड़ियाल, रेड क्राउन रूफ्ड टर्टल और लुप्तप्राय गंगा नदी डॉल्फिन के लिये जाना जाता है।

पोखरण में रुद्रास्त्र UAV का सफल परीक्षण

चर्चा में क्यों ?

भारतीय सेना ने राजस्थान के पोखरण में रुद्रस्त्र हाइब्रिड वर्टिकल टेक-ऑफ एंड लैंडिंग (VTOL) **UAV** का सफलतापूर्वक परीक्षण किया।

- सोलर डिफेंस एंड एयरोस्पेस लिमिटेड द्वारा विकसित यह UAV भारत की स्वदेशी रक्षा क्षमताओं को बढ़ाने हेतु किये जा रहे लगातार प्रयासों का हिस्सा है।

मुख्य बिंदु

- **रुद्रस्त्र UAV की मुख्य विशेषताएँ और क्षमताएँ:**
  - स्वदेशी VTOL UAV का नाम रुद्रस्त्र रखा गया है, जो आत्मनिर्भरता की शक्ति का प्रतीक है।
  - **परीक्षणों के दौरान प्रदर्शित प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार थीं:**
    - ऊर्ध्वाधर टेक-ऑफ और लैंडिंग (VTOL)
    - दीर्घ-धीरज मिशन
    - वास्तविक समय वीडियो प्रसारण
    - सटीक संलग्नता
    - ऊबड़-खाबड़ क्षेत्रों में परिचालन लचीलापन
- **परीक्षण प्रदर्शन:**
  - रुद्रस्त्र ने पूरे मिशन के दौरान स्थिर वास्तविक समय वीडियो लिंक बनाए रखा।
  - इसने **50 किमी. से अधिक के मिशन दायरे** में सफलतापूर्वक कार्य किया और प्रक्षेपण स्थल पर बिना किसी समस्या के लौट आया।
  - लक्ष्य पर निगरानी सहित UAV ने लगभग **1.5 घंटे की क्षमता** के साथ **170 किमी. से अधिक की दूरी** तय की।
- **अनुप्रयोग और रणनीतिक उपयोगिता:**
  - रुद्रस्त्र का उपयोग निगरानी, गुप्त सूचनाएँ एकत्र करने और लक्ष्य भेदन के लिये किया जा सकता है, जिससे यह पहाड़ी या दुर्गम क्षेत्रों के लिये आदर्श है।
  - VTOL UAV को उड़ान भरने अथवा उतरने के लिये रनवे की आवश्यकता नहीं होती, जिससे इन्हें विविध परिचालन परिवेशों में शीघ्र तैनाती हेतु अपेक्षित लचीलापन प्राप्त होता है।
- **ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत का उन्नत UAV पर ज़ोर:**
  - ऑपरेशन सिंदूर भारत का पहला बड़े पैमाने पर गैर-संपर्क सैन्य अभियान था, जिसमें ड्रोन, मिसाइलों और सटीक हथियारों का प्रयोग किया गया।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

ड्रोन प्रौद्योगिकी

ड्रोन एक पायलट रहित उड़ान मशीन है, जो लिफ्ट के लिए वायुगतिकी का उपयोग करती है, स्वायत्त रूप से या दूर से संचालित हो सकती है, और घातक या गैर-घातक कार्गो ले जा सकती है।

अवयव

- मानव रहित विमान (UA)
- नियंत्रण प्रणाली (ग्राउंड कंट्रोल स्टेशन - GCS)
- नियंत्रण लिंक (विशेष डाटालिंक)
- अन्य संबंधित सहायता उपकरण

वर्गीकरण

(ड्रोन नियम, 2021)

- **नैनो:** <250 ग्राम.
- **माइक्रो:** 250 ग्राम. से 2 किग्रा.
- **मिनी:** 2 किग्रा. से 25 किग्रा.
- **स्माल:** 25 किग्रा. से 150 किग्रा.
- **लार्ज:** >150 किग्रा.

अनुप्रयोग

- **मानचित्रण एवं सर्वेक्षण** (संपत्ति निरीक्षण, पटल निरीक्षण)
- **कृषि** (पक्षी नियंत्रण, **फसल पर छिड़काव और उसकी निगरानी** आदि)
- मल्टीस्पेक्ट्रल/थर्मल/NIR कैमरे, **हवाई फोटो/वीडियोग्राफी** और **लाइव स्ट्रीमिंग इवेंट**
- **आपातकालीन प्रतिक्रिया** (खोज और बचाव, समुद्री बचाव, अग्निशमन)
- **आपदा** (क्षेत्र मानचित्रण, आपदा राहत आदि)
- **फोरेंसिक**
- **खुदाई**
- **शिकारियों पर निगरानी**
- **मौसम** विज्ञान, विमानन, पेलोड ले जाना

रक्षा में ड्रोन

उद्देश्य

- निगरानी और टोही
- खोज और बचाव
- समुद्री निगरानी
- लड़ाकू ड्रोन
- आक्रमण हेतु उपयोग (विषम SWARM ड्रोन)
- आतंकवाद विरोधी अभियान

भारत का काउंटर-ड्रोन सिस्टम

- **इंद्रजाल** (भारत का उद्घाटन स्वायत्त ड्रोन-रक्षा गुंबद)
- **इज़राइल से युद्ध-सक्षम** हेरॉन **ड्रोन की खरीद**
- **अमेरिका से MQ-9B सशस्त्र ड्रोन का अधिग्रहण**

संबंधित विनियम

- विमान (सुरक्षा) नियम, 2023
- ड्रोन नियम, 2021 और ड्रोन (संशोधन) नियम, 2022

भारतीय पहल

- डिजिटल स्काई प्लेटफॉर्म
- नो-परमिशन-नो-टेकऑफ (NPNT) ढाँचा
- ड्रोन के लिए PLI योजना
- ड्रोन शक्ति योजना

मुद्दे

- सशस्त्र हमलों का खतरा बढ़ा है
- **डाटा सुरक्षा**
- **सस्ती लागत बड़ी आबादी** को ड्रोन खरीदने में सक्षम बनाती है
- युद्ध में ड्रोन का उपयोग (दूरस्थ युद्ध)
- **गैर-राज्य तत्त्वों द्वारा खरीद गंभीर खतरे पैदा** कर सकती है
- **सामूहिक विनाश के हथियारों को पहुँचाने** में आसानी

दृष्टि The Vision Drishti IAS

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- इस अनुभव ने आधुनिक युद्ध परिदृश्यों में उन्नत UAV क्षमताओं की अत्यधिक आवश्यकता को उजागर किया।
- इसके जवाब में भारतीय सेना ने भविष्य के ऐसे ही गैर-संपर्क खतरों के विरुद्ध भारत की तैयारी को सशक्त करने हेतु अधिक UAV को शामिल करने के प्रयास तेज़ कर दिये हैं।

दक्षिण-पश्चिम मानसून के कारण राजस्थान में भारी वर्षा

चर्चा में क्यों ?

राजस्थान सक्रिय दक्षिण-पश्चिम मानसून के प्रभाव में आ गया है, जिसके फलस्वरूप राज्य के विभिन्न भागों में विस्तृत एवं तीव्र वर्षा दर्ज की गई है।

- टोंक ज़िले के निवाई में राज्य में सर्वाधिक 165 मिमी वर्षा दर्ज की गई।

मुख्य बिंदु

- **राजस्थान में वर्षा वितरण:**
  - राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों में वर्षा वितरण में उल्लेखनीय भिन्नता देखने को मिलती है।
    - पूर्वी राजस्थान में औसत वार्षिक वर्षा लगभग **64.9 सेमी** होती है, जबकि पश्चिमी राजस्थान में यह घटकर **32.7 सेमी रह जाती है।**
  - राजस्थान के पूर्वी भाग में पश्चिमी भाग की तुलना में काफी अधिक वर्षा होती है तथा राज्य की कुल वार्षिक वर्षा में दक्षिण-पश्चिमी मानसून का योगदान लगभग 91% होता है।
  - **पश्चिमी राजस्थान मुख्यत:** शुष्क और अर्द्ध-शुष्क परिस्थितियों से युक्त है, जिसमें उत्तर-पश्चिमी भाग सर्वाधिक शुष्क है।
    - जैसलमेर को राज्य का सबसे शुष्क ज़िला माना जाता है, जहाँ वार्षिक वर्षा **100 मिमी से भी कम** होती है।
  - दक्षिणी राजस्थान में राज्य की सर्वाधिक वर्षा दर्ज की जाती है, विशेष रूप से झालावाड़ और बांसवाड़ा जैसे ज़िलों में।
    - झालावाड़ राजस्थान के सभी ज़िलों में सर्वाधिक औसत वार्षिक वर्षा प्राप्त करता है।
  - अरावली पर्वतमाला का प्रभाव: अरावली पर्वतमाला के पश्चिमी ढलानों, जैसे पाली और जालौर ज़िलों में पश्चिमी राजस्थान के अन्य भागों की तुलना में अधिक वर्षा होती है।
- **ऋतुओं के अनुसार भिन्नता:**
  - **मानसून ऋतु (जून से सितंबर):** कुल वार्षिक वर्षा का लगभग **90% इसी ऋतु में होता है।**
  - **शीत ऋतु (जनवरी और फरवरी):** स्थानीय मौसम की स्थिति के कारण मामूली वर्षा होती है।
  - उत्तर-मानसून ऋतु: कुल वार्षिक वर्षा में इसका योगदान बहुत कम होता है।

दक्षिण-पश्चिम मानसून

- दक्षिण-पश्चिम मानसून से प्राप्त वर्षा मौसमी है, जो जून और सितंबर के मध्य होती है।
- **मानसून के गठन को प्रभावित करने वाले कारक:**
  - **विभेदक तापन एवं शीतलन:** स्थल, जल की अपेक्षा अधिक तेज़ी से गर्म होता है, जिससे भारत के ऊपर निम्न दबाव तथा आस-पास के समुद्री क्षेत्रों पर उच्च दबाव का क्षेत्र निर्मित होता है।
  - अंतर-उष्णकटिबंधीय अभिसरण क्षेत्र (ITCZ): यह एक निम्न दबाव पट्टी है, जहाँ उत्तर-पूर्वी और दक्षिण-पूर्वी व्यापारिक हवाएँ मिलती हैं।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

- **मेडागास्कर के पूर्व में उच्च दबाव क्षेत्र:** यह उच्च दबाव क्षेत्र हिंद महासागर में लगभग 20° दक्षिण अक्षांश पर स्थित होता है।
- तिब्बती पठार का तापन: ग्रीष्म ऋतु में तीव्र तापन के कारण ऊपर की ओर तीव्र गतिशील हवाएँ चलती हैं, जिससे उच्च ऊँचाई पर निम्न दबाव क्षेत्र बनता है।
- **जेट स्ट्रीम:** ग्रीष्म ऋतु में पश्चिमी जेट स्ट्रीम, हिमालय के उत्तर की ओर स्थित हो जाती है।
- **दक्षिणी दोलन (SO):** यह प्रशांत महासागर और हिंद महासागर के बीच वायुदाब का आवधिक उलटाव है, जो मानसून के स्वरूप को प्रभावित करता है।

- **दक्षिण-पश्चिम मानसून का तंत्र और प्रारंभ:**
  - **ITCZ की गति:** यह सूर्य की गति के साथ उत्तर की ओर स्थानांतरित होता है।
  - हवा की दिशा: दक्षिण-पूर्वी व्यापारिक हवाएँ भूमध्य रेखा को पार करती हैं और कोरिओलिस बल के प्रभाव से दक्षिण-पश्चिमी मानसूनी हवाओं में परिवर्तित हो जाती हैं।
  - **मानसून गर्त:** जुलाई में ITCZ, 20°-25° उत्तर अक्षांश तक पहुँच जाता है, जो सिंधु-गंगा के मैदान पर स्थित होता है। दो मुख्य शाखाएँ: अरब सागर शाखा और बंगाल की खाड़ी शाखा
- **मानसून में अवरोध:** मानसून के दौरान वर्षा निरंतर नहीं होती। मानसून गर्त की स्थिति में बदलाव के कारण शुष्क अवधियाँ (अवरोध) उत्पन्न होती हैं।

AI के साथ पढ़ाई

चर्चा में क्यों?

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) आधारित शैक्षिक कार्यक्रम "पढ़ाई विद AI" ने राजस्थान के टोंक ज़िले के सरकारी स्कूलों के शैक्षणिक परिणामों में उल्लेखनीय सुधार किया है।

मुख्य बिंदु

- कार्यक्रम के बारे में: इस कार्यक्रम को **"पढ़ाई विद AI"** कहा जाता है, जिसका अर्थ है **"AI के साथ अध्ययन"**।
  - यह पहल छात्रों की स्वयं-गति से सीखने के लिये डिज़ाइन किये गए एक समर्पित वेब पोर्टल के माध्यम से डिजिटल शिक्षा और कृत्रिम बुद्धिमत्ता को एकीकृत करती है।
  - वेब पोर्टल छात्रों को पाठ्यपुस्तक के प्रश्नों को हल करने, समान समस्याओं का अभ्यास करने तथा कमज़ोर क्षेत्रों को निपुण करने में मदद करने के लिये सुधारात्मक अभ्यास, ड्रिल अभ्यास और व्यक्तिगत शिक्षण प्रदान करता है।
  - इसका उद्देश्य छात्रों को उन विषयों को समझने और उनका अभ्यास करने में मदद करना है, जो उन्हें कठिन लगते हैं तथा गणित पर विशेष ध्यान केंद्रित किया जाता है।
- **कार्यान्वयन रणनीति:**
  - गणित में कमज़ोर प्रदर्शन को दूर करने के लिये टोंक कलेक्टर द्वारा शुरू किया गया यह **AI-आधारित कार्यक्रम**, टोंक ज़िले के **351 स्कूलों** में लागू किया गया, जिसमें **2025 सत्र** को लक्षित करते हुए कक्षा 10 के लिये तीन महीने की कार्य योजना तैयार की गई।
- **प्रभाव और परिणाम:**
  - टोंक का कुल उत्तीर्ण प्रतिशत, राज्य औसत से अधिक रहा, जो **AI-आधारित शिक्षण कार्यक्रम** की सफलता को दर्शाता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

शिक्षा के लिये राजस्थान की अन्य डिजिटल पहल

- **AI-सक्षम मूल्यांकन:**
  - राजस्थान ने पारंपरिक परीक्षाओं से हटते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के अनुरूप **AI-संचालित, योग्यता-आधारित मूल्यांकन** की दिशा में कदम बढ़ाया है।
  - ध्वनि पहचान तकनीक का उपयोग करके 26 लाख से अधिक छात्रों के लिये मौखिक पठन प्रवाह (ORF) परीक्षण आयोजित किये गए।
  - कक्षा 9 से 12 तक के लिये सामान्य मूल्यांकन परीक्षण (CET) को मानकीकृत किया गया है।
- **बुनियादी ढाँचा एवं डिजिटल लर्निंग विस्तार:**
  - विद्यालयी बुनियादी ढाँचे में सुधार हेतु **225 करोड़ रुपए** आवंटित किये गए हैं।
  - डिजिटल कक्षाओं, स्मार्ट बोर्डों तथा ऑनलाइन शिक्षण प्लेटफार्मों को प्रोत्साहित किया जाएगा।
  - डिजिटल माध्यम से व्यावसायिक प्रशिक्षण और कैरियर परामर्श का एकीकरण किया जाएगा।
- **कौशल विकास एवं कैरियर तैयारी:**
  - विश्वकर्मा कौशल संस्थान तथा उन्नत कौशल एवं कैरियर परामर्श केंद्र की शुरुआत की गई है।
  - 36 ITI संस्थानों का आधुनिकीकरण किया गया तथा नए पॉलिटेक्निक कॉलेजों की स्थापना की गई है।

बीज महोत्सव 2025

चर्चा में क्यों?

राजस्थान, मध्य प्रदेश और गुजरात के आदिवासी त्रिसीमा में आयोजित चार दिवसीय बीज उत्सव (बीज महोत्सव) 2025 में स्वदेशी बीजों के सांस्कृतिक और पारिस्थितिकी महत्व का उत्सवपूर्वक प्रदर्शन किया गया।

- देशी बीज एक निश्चित जलवायु और स्थान पर पैदा होते हैं और उनका संरक्षण प्राय: स्थानीय समुदायों के द्वारा किया जाता है।

मुख्य बिंदु

बीज महोत्सव के बारे में

- **कार्यक्रम एवं सम्मान:** इस महोत्सव में अनाज, दालों, सब्ज़ियों और फलों के स्वदेशी बीजों को प्रदर्शित किया गया, जिनमें कई दुर्लभ और विस्मृत किस्में भी शामिल थीं।
  - पारंपरिक फलों के बीजों में जंगली आम, आकोल और टिमरू शामिल थे, जबकि पारंपरिक अनाज में दूध मोगर (देशी मक्का) और काली कामोद और ढिमरी की धान की किस्में शामिल थीं।
  - बीज संरक्षण में योगदान के लिये समुदाय के सदस्यों को **'बीज मित्र'** तथा **'बीज माता'** जैसे सम्मान प्रदान किये गए।
- **भागीदारी:** आदिवासी महिलाओं तथा बच्चों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की और कई फसल चक्रों हेतु बीज संरक्षण की तकनीकें सीखी।
- **संस्थागत सहयोग:**
  - कृषि एवं आदिवासी स्वराज संगठन, ग्राम स्वराज समूह, सक्षम समूह तथा बाल स्वराज समूह जैसे समुदाय-आधारित संस्थानों ने उत्सव के आयोजन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
  - इन्हें बांसवाड़ा-स्थित स्वैच्छिक संस्था 'वाग्धारा' का सहयोग प्राप्त हुआ, जो आदिवासी आजीविका से जुड़े मुद्दों पर काम करता है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025
SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस
SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स
SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप
SCAN ME

नोट :

नोट:

- वाग्धारा एक गैर-लाभकारी संगठन है, जो राजस्थान सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1958 के तहत संचालित होता है।
- इसका नाम 'वाग्धारा', इसके कार्यक्षेत्र '**वागड़**' (गुजरात से सटे राजस्थान का आदिवासी क्षेत्र) और '**धारा**' (अर्थात् धारा या प्रवाह) से मिलकर बना है।

सतत् कृषि में स्वदेशी बीजों का महत्त्व

- **बीज संप्रभुता:** देशी बीज किसानों को बीजों पर स्वामित्व बनाए रखने की शक्ति प्रदान करते हैं, जिससे वे महंगे एवं रासायन-आधारित संकर बीजों पर निर्भर नहीं रहते।
- **जलवायु अनुकूलता:** देशी बीज प्राय: स्थानीय कृषि-परिस्थितिकी परिस्थितियों के अनुकूल होते हैं, जिससे जलवायु परिवर्तन के दौर में भी फसल स्थिरता बनी रहती है।
- **सांस्कृतिक पहचान:** काली कमोद चावल, दूध मोगर मक्का तथा करींदा तरबूज जैसे बीज आदिवासी खानपान प्रणाली में सांस्कृतिक तथा पोषणात्मक महत्त्व रखते हैं।
- **कम आगत वाली कृषि:** ये बीज कम रासायनिक उपयोग में भी फलदायी होते हैं, जिससे पर्यावरण-संवेदनशील तथा कम लागत वाली कृषि को बढ़ावा मिलता है।

राजस्थान में MSME क्षेत्र की वृद्धि हेतु प्लग एंड प्ले सुविधा

चर्चा में क्यों?

राजस्थान सरकार ने राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं निवेश निगम (RIICO) के माध्यम से जयपुर स्थित सीतापुरा विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ) में नवनिर्मित प्लग एंड प्ले सुविधा में तैयार-से-संचालित औद्योगिक परिसरों के शीघ्र आवंटन की घोषणा की है।

- इसका उद्देश्य MSME इकाइयों को पूर्व-निर्मित औद्योगिक परिसर उपलब्ध कराना है, जो आवश्यक अधोसंरचना से पूरी तरह सुसज्जित हों ताकि उनके संचालन में किसी प्रकार की बाधा न आए।

नोट: राजस्थान की औद्योगिक प्रगति को प्रदर्शित करने के लिये सरकार **11-12 दिसंबर 2025** को जयपुर में 'राइज़िंग राजस्थान: पार्टनर-शिप कॉन्क्लेव 2025' का आयोजन करेगी।

मुख्य बिंदु

प्लग एंड प्ले सुविधा के बारे में:

- **'प्लग एंड प्ले' अवधारणा सामान्यत:** ऐसी तैयार सुविधाओं को दर्शाती है जिनमें भवन, बिजली-पानी-सीवरेज कनेक्टिविटी, सड़क संपर्क तथा अन्य मूलभूत ढाँचागत सुविधाएँ पहले से उपलब्ध होती हैं, साथ ही उद्योग शुरू करने हेतु आवश्यक अनुमतियाँ भी प्राप्त होती हैं।
- **MSME और नवाचार इकाइयों के लिये महत्त्व:**
- **सुलभता:** प्लग एंड प्ले मॉडल छोटे निवेशकों और **MSME इकाइयों** को उच्च गुणवत्ता वाले औद्योगिक परिसर न्यूनतम प्रारंभिक पूंजी निवेश के साथ सुलभ कराता है।
- **सुगमता:** यह सुविधा नवीन व्यवसायों को शीघ्र संचालन शुरू करने में सक्षम बनाती है, क्योंकि उन्हें अधोसंरचना विकास की अलग से आवश्यकता नहीं होती।
- **विकास में सहयोग:** राज्य सरकार का उद्देश्य उद्यमशीलता को बढ़ावा देना, छोटे उद्योगों के लिये अवसर प्रदान करना, तथा राजस्थान सहित अन्य राज्यों में आत्मनिर्भर व्यावसायिक वातावरण का निर्माण करना है।

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें
UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME
UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME
IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME
दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

नोट :

- **स्थायित्व:** यह पहल समग्र अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन देने के लिये विशेष रूप से हल्के विनिर्माण क्षेत्र में MSME को आकर्षित करने के देश के व्यापक लक्ष्य की पूर्ति करती है।

विशेष आर्थिक क्षेत्र (SEZ)

- **परिचय:** SEZ एक शुल्क-मुक्त क्षेत्र है जिसे व्यापार, शुल्क और संचालन के उद्देश्य से विदेशी क्षेत्र माना जाता है। कोई भी निजी/सार्वजनिक/संयुक्त क्षेत्र या राज्य सरकार या उसकी एजेंसियाँ SEZ स्थापित कर सकती हैं।
  - भारत में SEZ को पहली बार वर्ष 2000 में विदेश व्यापार नीति के तहत शुरू किया गया था, जिसने पहले के निर्यात प्रसंस्करण क्षेत्रों (EPZ) की जगह ली थी। वे **SEZ अधिनियम, 2005** और **SEZ नियम, 2006** द्वारा शासित होते हैं।
- **SEZ के प्रकार: SEZ** के अंतर्गत क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के क्षेत्र शामिल हैं, जैसे निर्यात प्रसंस्करण क्षेत्र (EPZ), मुक्त क्षेत्र (FZ), औद्योगिक संपदा (IE), मुक्त व्यापार क्षेत्र (FTZ), मुक्त बंदरगाह, शहरी उद्यम क्षेत्र और अन्य।
  - वर्तमान में भारत में 276 SEZ चालू हैं। वर्ष 2023-2024 में SEZ से कुल निर्यात 163.69 बिलियन अमरीकी डॉलर रहा।
    - उदाहरण के लिये, गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंस टेक-सिटी (गिफ्ट सिटी, भारत)।
- **उद्देश्य:**
  - अतिरिक्त आर्थिक गतिविधि सृजित करना
  - वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात को बढ़ावा देना
  - रोज़गार सृजन करना
  - घरेलू और विदेशी निवेश को बढ़ावा देना
  - बुनियादी सुविधाओं का विकास करना

राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं निवेश निगम (RIICO)

- यह एक सरकारी उपक्रम है, जिसे कंपनी अधिनियम, 1956 के तहत **1969** में राजस्थान राज्य औद्योगिक एवं खनिज विकास निगम (RSIMDC) के रूप में शामिल किया गया और **1 जनवरी 1980** को इसे दो भागों में विभाजित कर दिया गया: राजस्थान राज्य औद्योगिक विकास एवं निवेश निगम लिमिटेड (RIICO) और राजस्थान राज्य खनिज विकास निगम (RSMDC)।
- रीको ने औद्योगिक क्षेत्रों की स्थापना करके राजस्थान राज्य के औद्योगीकरण में अग्रणी भूमिका निभाई है।
- रीको बड़े, मध्यम और लघु स्तर की परियोजनाओं को ऋण प्रदान करके एक वित्तीय संस्थान के रूप में भी कार्य करता है।

एल्बिनो गिलहरी

चर्चा में क्यों ?

राजस्थान के टोंक ज़िले में पहली बार एक दुर्लभ एल्बिनो "सनफ्लॉवर" गिलहरी देखी गई है, जो वन्यजीव प्रेमियों और शोधकर्त्ताओं के लिये एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण दृश्य है।

- हालाँकि एल्बिनो गिलहरियाँ पहले भी बांसवाड़ा और डूंगरपुर ज़िलों में देखी जा चुकी हैं, फिर भी इस प्रकार की घटना अभी भी अत्यंत दुर्लभ है।

मुख्य बिंदु

एल्बिनो गिलहरी के बारे में:

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप SCAN ME

- **रंग-रूप:**
  - एल्बिनो गिलहरियों की पहचान उनके शुद्ध सफेद फर और गुलाबी या लाल आँखों से होती है, जो मेलेनिन की पूर्ण कमी के कारण होती है, जो सामान्य रंग के लिये ज़िम्मेदार वर्णक है।
  - उनकी आँखें अंतर्निहित रक्त वाहिकाओं की दृश्यता के कारण गुलाबी या लाल दिखाई देती हैं।
- **आनुवंशिक कारण:**
  - गिलहरियों में ऐल्बिनिज़्म एक अप्रभावी आनुवंशिक उत्परिवर्तन के कारण होता है, जो मेलेनिन के उत्पादन को रोकता है।
  - किसी संतान के ऐल्बिनो होने के लिये माता-पिता दोनों में जीन होना चाहिये।
  - उत्परिवर्तन आम तौर पर एंजाइम टायरोसिनेस को प्रभावित करता है, जो मेलेनिन संश्लेषण के लिये महत्त्वपूर्ण है।
  - विशेषज्ञ कहते हैं कि इस बात की कोई निश्चितता नहीं है कि एल्बिनो गिलहरी की संतानों को वही एल्बिनो गुण विरासत में मिलेंगे, क्योंकि ये गुण पुर्णत: आनुवंशिक कारकों द्वारा नियंत्रित होते हैं।
  - इस क्षेत्र में गिलहरियाँ आमतौर पर दो से चार बच्चों को जन्म देती हैं।
  - गिलहरियों की संतानें आमतौर पर स्लेटी-ग्रे रंग की होती हैं, जो दुर्लभ एल्बिनो प्रजाति के विपरीत होती है।
- **दुर्लभता:**
  - एल्बिनो गिलहरियाँ अत्यंत दुर्लभ होती हैं। अनुमान है कि लगभग **1,00,000 में से 1 गिलहरी** ही एल्बिनो रूप में जन्म लेती है, हालाँकि कुछ क्षेत्रों में इनका स्थानीय जमाव देखा गया है।
  - सफेद गिलहरियों का केवल एक छोटा प्रतिशत ही वास्तविक एल्बिनो होता है।
- **कालोनियाँ और जनसंख्या:**
  - संयुक्त राज्य अमेरिका में गिलहरियों की बड़ी आबादी है, जिसमें कई स्थानों पर सफेद या एल्बिनो गिलहरियों की कालोनियाँ पाई जाती हैं।
  - भारत में गिलहरियाँ व्यापक रूप से पाई जाती हैं, जिनमें इंडियन पाम गिलहरी और होएरी-बेली गिलहरी जैसी कई स्थानीय प्रजातियाँ शामिल हैं।
    - हालाँकि एल्बिनो गिलहरियाँ अत्यंत दुर्लभ हैं, फिर भी असम, राजस्थान, गुजरात और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में इनके देखे जाने की घटनाएँ दर्ज की गई हैं।
- **जीवित रहने की चुनौतियाँ:**
  - एल्बिनो गिलहरियाँ जंगल में जीवित रहने में अधिक कठिनाइयों का सामना करती हैं क्योंकि इनका छलावरण (camouflage) नहीं होता, जिससे वे शिकारियों के लिये अधिक स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं।
  - इनमें सूरज की किरणों से झुलसने और त्वचा कैंसर का जोखिम भी अधिक होता है क्योंकि इनमें सुरक्षात्मक वर्णक नहीं होता।
- **व्यवहार और अनुकूलन:**
  - अपनी विशिष्ट आकृति के बावजूद, एल्बिनो गिलहरियों का व्यवहार अन्य सामान्य गिलहरियों जैसा ही होता है। वे भोजन एकत्र करने, पेड़ों पर चढ़ने तथा अन्य गिलहरियों से संवाद करने जैसी गतिविधियाँ करती हैं।

✦ ✦ ✦ ✦

दृष्टि आईएएस के अन्य प्रोग्राम से जुड़ें

UPSC मेन्स टेस्ट सीरीज़ 2025 — SCAN ME

UPSC क्लासरूम कोर्सेस — SCAN ME

IAS करेंट अफेयर्स मॉड्यूल कोर्स — SCAN ME

दृष्टि लर्निंग ऐप — SCAN ME

नोट :